कुम्हार की भट्टी में जलती नारी रू चित्र मुद्गल की नज़र में

डॉ सजीव के, असिस्टेंट प्रोफेसर,

एन एन एस कॉलेज, ओटप्पलम .

बहुत ही सार्थक शीर्षक है चित्र मुद्गल का बहु चर्चित उपन्यास ष्आवांष। ष्आवांष का माना है कुम्हार की भट्टी। दरअसल नारी कुम्हार की भट्टी में जल रहीं है। नारी की बहुत सारी समयायें होती हैंए मगर हल दूर दराज़ पर हैए वक्त के गुज़रान में नयी नयी समस्याएं और भी आती हैं । चित्रा जी ने मुख्य कथा के साथ नारी की समस्याओं को लेकर कई उपकथाओं को जोड़ दिया है ए यह ज़रूर ही बेजोड़ है। कोख की समस्या आधुनिक दौर की एक जलती समस्या है । प्यार में अगर पुरुष दैहिक सम्बन्ध करना चाहता है तो ष्कण्डोमष के बिना नहीं हो सकता। प्यार और जिस्म के मामले में स्मिता नामक पात्र अपनी क्रन्तिकारी बात स्पष्ट करते हुए कहती है कि ष्कण्डोमष का इस्तेमाल न कर पानेवाला प्यार के काबिल नहीं है। इसका इज़हार उपन्यासकार ने इसमें किया है । नारी विमर्श के मैदान में नमिता एक नया नारी किरदार है उसपर उजाला फैलाना इस उपन्यास का लक्ष्य है।

; कुंजी शब्द रू आवांए गिलीगुड़ए शोषण ए नारी विमर्श आदिद्ध

उपन्यास इन्सानी ज़िन्दगी को रेखांकित करनेवाला एक सशक्त दस्तावेज़ है । आज़ादी के बाद के हिंदी उपन्यासों में बदलाव के कई दौर देखने को मिलता है । इंसानी ज़िन्दगी के विकास के साथ ही साथ साहित्य का भी विकास होने लगा है । जीवन में फैले अन्यायए भ्रष्टाचारए अनुशासनहीनताए चारित्रिक गिरावए दंगा फसादए जातिवादए धर्मवादए प्रांतवादए बढ़ती आबादीए बेरोज़गारीए महंगाईए जीवन की छोटी बड़ी समस्याओं तक उपन्यास में संजीदगी विषय बनके उभर आने लगे । आज़ादी के पहले से भी ज़्यादा महिला उपन्यासकार उपन्यास के क्षेत्र में अपनी जगह बनाने लगी हैं। नयी महिला उपन्यासकार वर्त्तमान दौर के

मुताबिक़ बदलती मानसिकता को अलग ृ अलग आयाम देकर प्रस्तुत करने लगी हैं । लेखिकाओं ने अपने अपने दंग से अलग ृ अलग आयाम देकर प्रस्तुत किया है ।

हिंदी की महिला उपन्यासकारों में चित्रा मुद्गल का नाम आदर के साथ लिया जाता है । खुद रचनाएँ रचनाकारों के अस्तित्व को खोल देती हैं। रचनाकार के माहौलए वर्त्तमान सामाजिकए धार्मिकए राजनैतिकए और आर्थिक परिस्थितियाँ उसके साहित्य में परिलक्षित होते हैं । जीवन से भोगेए आसपास से देखे समझे तजुर्बों का प्रभाव रचना में दिखाई देता है । वे समाज सेविका के रूप में भी चर्चित हैं । चित्रा जी का जन्म सामंती मूल्यों में बंद गांव उत्तर प्रदेश के उन्नाव में हुआ हैय ष्आज भी उन्नाव नारी पीड़ा के संघर्ष का केंद्र है । मगर परिवार के साथ वे उन दिनों मद्रास में थीं। उनका तबादला प्रायः मुंबाईए चेन्नईए विशाखपट्टनमए गोवा आदि स्थानों पर रहता था । अलग अलग जगहों की ज़िन्दगी ने उन्हें लिखने की चीज़ें प्रदान की।

चित्रा मुद्गल को मज़दूर यूनियन के प्रति ख़ास तरह का लगाव था । चित्रा मुद्गल कहती है किएश मैं पाठकों में अपने साहित्य के प्रति अभिरुचि निर्माण करना चाहती हूंए ताकि मैं पाठकों से हमेशा जुड़ी रहूं । मुझे उनके पत्रों के उत्तर देना अच्छा लगता है तथा पाठकों से फोन पर संपर्क भी स्थापित करती हूं। उनके कार्य के प्रति उन्हें सदिच्छा भी देती हूं। श ;1द्ध जिसकी वजह लेखिका को निरंतर साहित्यिक रचनाओं की तामीर में बल मिल गया है । श्आवांश्ए श्गिलिगडूश्ए श्एक ज़मीन अपनीश एश दि क्रसिड श आदि उनके उपन्यास साहित्य हैं।

चित्रा मुद्गल का श्एक ज़मीन अपनीश बहुचर्चित उपन्यास है । इसमें स्त्री शोषण पर केन्द्रित संचार माध्यमों की भोगवादी दृष्टिकोण का पर्दाफाश किया गया है । मीडिया इतना मज़बूत होकर भी मीडिया में काम करनेवाले मर्द नारी का शोषण करने में हिचकते नहीं हैं ।

श्गिलिगडुश चित्रा मुद्गल का अंतिम प्रकाशित उपन्यास है । इसमें आज की युवपीढी द्वारा अपने बुजुर्गों की घोर उपेक्षा और बेइज़्ज़ती का बड़ा ही मार्मिक और सक्रीय चित्रण किया गया है । आज के भरे ृ पूरे परिवार में भी बुजुर्गों की स्थिति परिवार के पालतू कुत्ते से भी बदत्तर

है। महानगरों के शिक्षित मध्यवर्गीय परिवार का समकालीन जीवन कहाँ तक यांत्रिकए आत्मकेंद्रित और अमानवीय हैए श्गिलिगडुश् इसका जीवंत गवाह हैए दस्तावेज़ है ।

ष्आवां ष् की आधारभूमि मुंबई का उनका जीवन हैए तो अन्य रचनाएं भी उनके जीवन में घटने वाली प्रतिक्रियाओं का नतीजा है। रचनाओंए घटनाओं के इस गंगा जमुना को स्वीकार करती हुई चित्रा मुद्गल लिखती हैए श् लोगों के भी काम करते हुए पीक उगलते हुए फोड़ों सा एक दारुण संसार मस्तिष्क पर निरंतर हथौड़ों सा धमकता। अनुभव जगत की टीसता है और दुनियां उनकी आंखों के सामने उधड़ती चली जाती है । श् ;2द्ध श्आवांष उपन्यास के संबंध में विद्वानों के विचार डॉ कन्हैयालाल नंदन लिखते हैए श् आवांष बीती शताब्दी के अंतिम वर्षों में लिखी गई हिंदी कि ऐसी औपन्यासिक कृति हैए जिसे लंबे अरसे तक एक उपलब्धि के रूप में गिना जाएगा । श् ;3द्ध

श्आवां श् चित्राजी का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है । यह एक बड़ा उपन्यास भी है। मज़दूर आन्दोलन और उसका नतीजा ए उसकी कामयाबी और बेक़ामयाबीए मज़दूर राजनीति के अंतर्विरोधए आपसी वैमनस्यए प्रतिद्वंदिताए पूंजीपति वर्ग के शोषणए छल छद्म आदि का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है । नमिता पांडे इस उपन्यास का प्रमुख पात्र है जो तालीम हासिलशुदा नारी है । उसके चरित्र को संघर्षशीलए महत्वाकांक्षीए आधुनिक मूल्यों के प्रति सचेत युवती के रूप में प्रस्तुत किया गया है । इसमें घर परिवार और समाज की समस्याओं और दुरावस्थाओंए विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को जीवंत शैली में हक़ीकती तौर पर बयान किया गया है। ष्आवां श् उपन्यास सहस्त्राब्दी का पहला अंतर राष्ट्रीय पुरस्कार के योग्य ठहराया गया है ।

श् आवां ष् का मतलब कुम्हार की भट्टी है । कुम्हार की भट्टी में मिट्टी के बर्तन सेककर पक्के किये जाते हैं। नारी के सामाजिक तथा राजनीतिक स्तर पर होनेवाली दुर्दशा का चित्रण श्आवांष उपन्यास का केंद्र है । यह उपन्यास दत्ता सामंत जैसे कामगार नेता की ईमानदारी तथा मजदूरों पर होनेवाले अन्याय के खिलाफ अत्याचार एवं शोषण के विरूद्ध आवाज़ उठाता है । ऐसे नेता मजदूरों में जागृति लाने का काम करते हैं । उपन्यास में कई

पुरुष पात्र है । पात्र उत्तरभारतीए मराठीए गुजरातीए मारवाड़ीए और सिंधी है । विभिन्न भाषाओं के पात्र एक मंच पर लाकर चित्रा मुद्गल ने क्रांतिकारी कदम तो उठाया है और उपन्यास की महत्ता में भी चार चांद लगाया है । स्त्री पात्रों में नमिता पांडे का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है वह उपन्यास की धुरी है । कथा का ज़्यादातर हिस्सा धुरी पर घूमता प्रतीत होता है । नमिता के अतिरिक्त और भी कई स्त्री और पुरुष पात्र हैए जिनके बिना कथा पूरी नहीं हो सकती । मूल कथा के विस्तार की मदद में कई उपकथाएं भी जोड़ी गयी हैं । नायिका नमिता पक्षाघात से पीड़ित हैए वह बिस्तर पर पड़ी हुई है । घर की आमदनी को बढ़ाने केलिए वह खूब कोशिश करती है । इसलिए वह पापड़ बेलती हैए साड़ियों में फॉल टाकती हैंए ट्यूशने करती है । मीठाबाई कॉलेज से उसने पिछले साल बी॰ ए॰ पार्ट टू किया टाईपिंग और शार्टहण्ड का कोर्स भी किया है । अन्ना साहब की कृपा से उसे नौकरी मिलती है । किन्तु उनके ही अश्लील कार्टून की वजह उसको नौकरी छोड़ देनी पड़ती है।

एक दिन रेल यात्रा में उसकी पहचान मैडम वासवानी से होती है । वह नमिता को लिपिक तथा आभूषणों की मॉडलिंग की नौकरी देती है । इस बीच नमिता का परिचय संजय कनोई से होता हैए संजय कनोई को अपना बच्चा चाहिएए नामर्द के स्थान पर मर्द बनना चाहता है । नमिता के पिता गुजर जाते हैं ृ उनकी मृत्यु यात्रा राजनीतिक मुद्दा बनता है । पवार उसके पिता के साथ काम करनेवाले एक दलित श्रमिक नेता है । उसे नमिता को पसंद हैए नमिता को भी वह पसंद है किन्तु पवार नमिता को जातिवादी जाल में फंसाकर अन्ना साहेब के समान नेता बनने के सपने देखता है । संजय कनोई नमिता को हैदराबाद भेजते हैंए वही नमिता से यौन संबंध बना झूठा प्यार जताते हैं साथ में नमिता उनके व्यवहार से उन्हें अपना संरक्षक मानने लगती है । नमिता इसी बीच गर्भवती बनती है । अन्ना साहब की मृत्यु की खबर सुनकर उसका गर्भपात होता है । नारी समाया को मज़बूत करने केलिए लेखिका ने गौतमी की कहानी भी इसमें उपकथा के रूप में जोड़ दिया है । ६ आवां ६ में चित्रा जी ने नारी जीवन की उच्चावर्गीय नारी की पूंजी केंद्रीकरण कीए यौन तृप्तिए यौन शोषणए मानसिक समस्याए असफल प्रेम कीए रूढ़िग्रस्त समाजए पारिवारिक घुटन की समस्याएं प्रस्तुत की है ।

श्आवांष में नमिता के माध्यम से श्किराए की कोखश् जैसी नई समस्या पर लेखिका ने उजाला डाला है । नमिता के दिल के अंतर्द्वन्द्व को न दिखाने के लिए बीच ृ बीच में नमिता ख़ुशी प्रकट कर देती है। एक मज़दूर की बेटी नमिता के मायूस व अवसाद को इनमें दिखाया गया है । नमिता का चरित्रए संघर्ष करनेवाली नारी का है। वह मूल्यों के प्रति बिलकुल सचेत है । यह उपन्यास महानगरीय जीवन के मध्यवर्गीय महिलाओं की आर्थिक स्थिति व यौन शोषण के यथार्थ का गवाह है ।

नारी विमर्श को साम्प्रदायिकता से जुड़ने की भरसक कोशिश उपन्यासकार ने की है। मज़दूर किशोरी बाई की बेटी सुनंदा का मुस्लिम प्रेमी सुहैल से शादी धर्म की दीवार पर टक्कर खाके बर्बाद हो जाती है । सुनंदा को इस्लाम लेना इसलिए मंजूर नहीं क्योंकि प्रेम करते वक्त सुहैल ने कोई ऐसी शर्त नहीं रखी थी । जो आज रख रहा है । वह बेटी को जन्म देती हैए उसे स्वयं पाल पोसकर ृ बड़ा करना चाहती हैए किन्तु सुनंदा की हत्या कर दी जाती है । स्मिता नमिता की सहेली हैए उसके पिता मटका किंग मदन खत्री हमेशा शराब के नशे में रहते हैं ए वे अपनी बड़ी बेटी के साथ हमदेह होते हैं और हिचकते भी नहीं। स्मिता की बहन की स्थिति बहुत बुरी होती है । स्मिता इस घटना से इतनी त्रस्त होती है कि एक दिन चुपके से पिता को सीढ़ियों से ढकेल देती हैंए उनकी मृत्यु होती है । नारी नारी का दुश्मन हैण इसका मैडम वासवानी जैसी धूर्त दलाली करनेवाली स्त्री लड़कियों को कैसे जाल में फसाती है यह भी प्रस्तुत है ।

श्आवांष उपन्यास में राजनीतिए मज़दूरों का संगठनए आन्दोलनए पूंजीपति वर्ग की शोषणवादी प्रवृत्तिए नारी जीवन की बहुविध समस्याएंए महानगरीय बोधए सामाजिक स्थितियां आदि बातों को लेखिका ने दिखाया है। शोषित पीड़ित मज़दूरए धनिकए सामान्य लोगों का यथार्थ चित्रण उपन्यास में है।

उपन्यास में समाज के अलग ृ अलग वर्गों की नारियों की स्थिति तथा उनके जीवन की विसंगतियों को प्रस्तुत किया गया हैए एक और सदियों से पीड़ित शोषित मज़दूर हैए तो दूसरी ओर संजय कनोई जैसा स्त्री शोषक उपन्यास में मौजूद है। अधिकार की बात सिर्फ

पुरुष केंद्रित है तो चित्रा जी स्त्री पुरुष की साझेदारी का पक्षधर हैए नमिता को अपने ही घर में अजनबी बनकर जीना पड़ती है। रिश्तों की असहमियत भूलकर सिर्फ नारी को वासनात्मक रूप से देखने का मंज़र उपन्यास में मौजूद है।

सुनंदा के उपकथा के माध्यम से लेखिका ने हिन्दू दृ मुस्लिम साम्प्रदायिकता दृ विमर्श और नारी विमर्श का जिक्र किया है । सुनंदा मुसलमान लड़के सुहैल से प्रेम करती है और शादी होने में धर्म बाधा बन जाता है। सुनंदा कहती है किए श सुहैल ने प्रेम करने के समय तो ऐसी कोई शर्त नहीं रखी थीद्ध जो शर्त पहले शर्त नहीं थीए बाद में क्यों बनेघ्श ;4 द्ध सुनंदा बिना धर्म दृ परिवर्तन के ही शादी करने के लिए तैयार है । सुनंदा ने सुहैल से विवाह करने में इनकार नहीं किया गौर करने की बात है । उसने मुसलमान बनने से इनकार किया है । श्वह हिन्दू होकर मुसलमान से शादी करने को राजी थीए क्योंकि वह हिन्दू दृ मुस्लिम एकता को धर्म से ऊपर देखना चाह रही थी । जाति धर्म के उत्पात से मुक्त होकर सुनंदा को न्याय दीजिए । श ;5द्ध सुनंदा को न्याय तो नहीं मिलता बल्कि उसकी हत्या की जाती है ।

सुनंदा की हत्या के बाद नमिता को पता चलता है कि उसके पिता देवीशंकर पांडे और किशोरीबाई के अवैध संबंध का प्रतिफलन थीए सुनंदाए इसीलिए वह उसकी मौसेरी बहन लगती थी। नमिता की मां उसके सामने ब्याह की बात चलाती है तो वह ब्याह के लिए तैयार नहीं होती और कहती हैए श तुम्हारे बाबूजी के कटु संबंधों ने इसकी कोई गुंजाइश नहीं छोड़ीण श;6द्ध

स्मिता और नमिता सहपाठिनी है । दोनों के स्वाभाव और व्यवहार में जमीन दृ आसमान का फर्क है। स्मिता का बाप मटका किंग एक नंबर का शराबी है । शराब के नशे में वह स्मिता की बड़ी बहन को यौनाचार के लिए घसीट लेता है । इसलिए स्मिता अपने बाप से नफ़रत करती है । उसकी बाप की मृत्यु सीढ़ियों से गिरने से हुई कि किसी ने उसकी हत्या कर दी। स्मिता अपनी सहेली नमिता को अपने बाप की मय्यत में सम्मिलित होने के लिए कहती है। वह बाप को राक्षस कहती है । श उसके मारे हम रोज दृ रोज मरते रहे। उसके

मरे पर हम सब नई ज़िन्दगी जिएंगेण्ण खुलकर सांस लेंगे घर में रहते हुए दडबे में दुबके नहीं रहेंगे। कीड़े दृ मकोड़ों की भांति फड़फड़ाते । श ;7द्ध

स्मिता पुरुषों की आखेटक है । उसने शरत से दोस्ती गांठ रखी है। वह दैहिक सुख के लिए तड़पती हुई दृ सी लगती है । वह शरत से कहती हैए श शरत! बड़ी ज़ोर से तुम्हें प्यार करने का जी हो रहा हैण्ण्ण किसी होटल में सस्ता सा कमरा लेकर मिलते हैं।श 8 शरत को वह कंडोम लाने के लिए कहती हैए लेकिन शरत को यह नहीं मालूम कि कंडोम कहां मिलता है । इस्तेमाल करने की बात तो दूर । इस पर स्मिता कहती हैए श गधे की औलाद मैं तेरे बच्चे की कुँआरी मां नहीं बनना चाहती और जो लड़का कंडोम इस्तेमाल करना नहीं जानताए वह मेरा प्रेमी होने के काबिल नहींण्ण वैसे तो हरामखोर मर्द रोते नहींण्णसाले रुलाने पर ही रोते हैए रुलाने वाला चाहिए। रोता हुआ मर्द कितना सुरीला लगता है । श;9द्ध स्मिता शरत को छोड़कर विक्रम को फंसाती है । विक्रम अमेरिका जाने वाला है। स्मिता भी वही जाने की बात करती है। उसकी बड़ी बहन की मानसिक चिकित्सा डॉण रमोला कर रही है । वह अपने आप को अंत तक क्षमा नहीं करती । वह एकदम बिंदास एवं संघर्षशील स्त्री लगती है। यौनाचार के मामले में वह किसी भी पुरुष को पटाने में माहिर है । इसीलिए तो वह शरत को छोड़कर विक्रम को अपना लेती है और विक्रम को छोड़कर किसको अपनाएगी अल्ला मालिक। कुछ भी हो स्मिता की कहानी दर्दनाक है ।

इसमें समाज सेविकाए मध्यवर्गीय नारीए मज़दूरए निम्नवर्ग नारी उच्चवर्गीय नारी वे या जीवन बिताती स्त्री आदि के चित्र हमे मिलते हैं। इसमें चित्रित मुख्य एवं महत्वपूर्ण समस्या स्त्रियों का शोषण है । यौन शोषण और श्रम शोषण का भी।

नारी शोषण का जिक्र इस उपन्यास के आरंभ से अंत तक है । उपन्यास में नमिता पाण्डे तीन बार यौन शोषण का शिकार बन जाता है। किशोरीबाई मज़दूरों के प्रति होनेवाले अनैतिक व्यवहारों के विरोधकर के अपनी आखिरी सांस तक मजदूरों के नैतिक अधिकारों के लिए लड़ती आदर्श नारी है । किशोरिबाई का जीवन अंत तक संघर्ष पूर्ण रहा । उनकी चरित्र में विद्रोहीए ममताए प्यार आदि भाव मिल जुले है । वह धंधा छोड़कर नौकरी करके

जीने लगती है । लेकिन पुरुष समाज धंधा का नाम लेकर शोषण करते रहे। नारी शोषण का जिक्र इसमें है ।

चित्रा जी ६ आवां ६ में नारी जीवन के कई संघर्षपूर्ण क्षण है । इसमें समाज सेविकाए मज़दूरए निम्नवर्गीय नारीए मध्य वर्गीय नारीए उच्चवर्गीय नारीए गलियों एवं झोपड़ियों में रहती स्त्रीए कंपनियों में नौकरी करती स्त्रीए वेश्या जीवन बिताती स्त्री आदि के चित्र हमें मिलते हैं । जीवन के हर स्तर के स्त्री जीवन का इसमें समावेश किया गया है । उपन्यास की पृष्ठभूमि श्रमिक राजनीति है ।

चित्रा जी की भाषा शैली के संबंध में कहा जाय तो पात्रए परिवेश और कथा की अंतर्वस्तु के अनुरूप भाषा के प्रयोग से उनके साहित्य की पठनीयता और भी बढ़ जाती है ।

चित्रा जी अपने उपन्यासों में सामाजिक जीवन के सारे संदर्भों को विशेष कर नारी जीवन से संबंधित समस्याओं को प्रस्तुत किया है । समकालीन साहित्य में कई लेखिकाओं ने नारी जीवन से जुड़ी स्थूल एवं सूक्ष्म समस्याओं को मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखने का प्रयास किया। चित्रा मुद्गल ने अपनी उपन्यासों में नारी जीवन के अनुच्छेद पहलुओं पर प्रकाश डालने की कोशिश करने के साथ ही शोषित नारी के प्रति अपनी हमदर्दी विद्रोहात्मक रूप भी चित्रित किया हैय जिन्होंने अपनी शोषित के विरुद्ध आवाज़ उठायी है । नारी चेतना को जागृत करने का कार्य वह उपन्यास करता है । श्रमिक राजनीति के परिवेश में लिखे जाने पर भी यह उपन्यास एक स्त्रीदृविमर्श सम्बन्धी उपन्यास भी है। आज की नारी यह सोचती है कि अपनी अस्मिता उसे बनायी रखनी है तो पहले उसकी लड़ाई अपने घर में लड़नी पड़ती है चित्रा जी के कई नारी पत्रों में कुछ ऐसे पात्र भी है जो घर पर ही अपनी लड़ाई शुरू कर देती है ।

संदर्भ संकेत

1ण इंटरनेट साइट रू ूण्बीपजतंउनकहंसण्पदजव

2 चित्रा मुद्गल रू जगदम्बा बाबू गांव आ रहे है ए पृण 2

3 गंगाजल रू त्रैमासिक पत्रिकाए डॉ नंदन पृ ण 239

4 आवां उपन्यास रू चित्रा मुद्गल पृ ण112

5 वहीं रू पृण123

6ण वहीं रू पृण 249.250

7ण वहीं रू पृण 371

8ण वहीं रू पृण 204

9ण वहीं रू पृण 205